इल्म दुन्या तलब करने के लिये सिखा जायेगा

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

महमुदुल मवाइज़ उर्दु से रिवायत का खुलासा लिप्यान्तर किया गया है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

आजकल देखा जाता है के हमारे मुआशरे मे लोग दुन्या को ही तरजिह देते है और नीयत भी हमारी सही नही इसी तरह इल्म हासिल करते है तो उसमे भी नीयत मे कमी आ जाती है. तो फिर इस इल्म से लोगो को किया फायदा होगा, जो इल्म नामो नमूद और शोहरत के लिये हासिल किया जाये वो इल्म न उसको फायदा देगा और न लोगो को उससे फायदा पोहचेगा और याद रहे के इल्म के बारे मे कल कयामत के रोज पूछा जायेगा के इल्म हासिल तो किया, लेकिन कया अमल किया?

एक आलिम अल्लाह के दिये हुवे इल्म को फैला रहा है अल्लाह तआला की तरफ से उससे पुछा जायेगा हमने इल्म दिया था तो कया किया? वो कहेगा अल्लाह पढा और

पढाया और उसकी खूब तरवीज और इशात की और लोगो को खूब सिखाया दीन के करीब किया दावते दी अल्लाह तआला की तरफ से कहा जायेगा ये इसलीये था के लोग कहे के बडा आलिम और बडा कारी है. (मिश्कात, मुस्लीम)

तो देख्ये यहा ये कोई दुन्यवी अमल नही है बल्के दीनी अमल है और इस वकत दुन्या मे उचे उचे जो आमाल हो सकते है उनमे से है लेकिन नीयत दुरूस्त नही थी और ज़ज्बा सही नही था इसलीये उस अमल के उपर बजाये उसके के सवाब मिलता और जन्नत का फैसला होता जहन्नम का फैसला कर दिया गया अमल है ज़ाहिरी शकलो सुरत है सब है लेकिन अन्दर का मामला खराब था इसलीये उसको बजाये सवाब मिलने के सजा हुई.

एक तो ये बतलाया है के आदमी गुनाहो की वजह से इल्म से महरूम हो जाता है और दलील पेश की के हजरत इमाम मालिक (रह) की खिदमत मे इमाम शाफे (रह) तलबे इल्म के लिये हाज़ीर हुवे चन्द दिन उनकी खिदमत मे रह कर

वापिस जाने लगे तो इमाम मालिक (रह) उनको ताकीद फरमायी के मे देख रहा हु के अल्लाह ने तुम्हारे दिल मे इल्म का एक नूर

डाला है गुनाहो के ज़रीये से उस नूर को बुजा मत देना मिटा मत देना गोया गुनाहो की वजह से आदमी इल्म से महरूम रेहता है रोज़ी से भी महरूम होता है.

अभी मे रसूलुल्लाहﷺ का इरशाद नकल कर चुका के माशीयत के इरतिकाब की वजह से आदमी रोज़ी से महरूम हो जाता है और गुनाह का इरतिकाब करने की वजह से अल्लाह की जात से उसको वहशत और गभराहट होने लगती है और लोगो से भी वहशत होने लगती है खास कर जो लोग नेक और अहलुल्लाह होते है उनके पास जाने से उसके दिल मे एक खास किसम की वहशत सी पैदा होती है उनकी खिदमत मे हाजरी से आदमी जो बरकते हासिल करता है वो अपने गुनाहो की नहूसत की वजह से उससे भी महरूम रेहता है और उस गुनाह की वजह से उसके दिल मे ज़ुल्मत छा जाती है और उस ज़ुल्मत का असर उसके चेहरे

और आंखो पर आता है चुंनाचे गुनेहगार आदमी कितना ही हसीन और जमील क्यू न हो उसके चेहरे पर एक सियाही सी मालूम होती है और नेक आदमी कैसा ही सांवला हो लेकिन एक नूर उसके चेहरे पर मालूम होता है.

हजरत अब्दुल्ला बिन उमर (रदी) हजरत अब्दुल्ला बिन मसउद से रिवायत नकल करते है के रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया के इन्सान के पाउ कयामत के दिन अल्लाह के सामने से हट नही सकेन्गे जब तक इन पांच चीझो के मुताल्लीक सवाल न किया जाये:-

(1) उमर कहा गुज़ारी कहा खर्च की.

(2) जवानी के मुताल्लीक के जवानी की ताकतो को कहा लगाया.

(3) माल कहा से और कैसे कमाया और कहा खर्च किया.

(4) और माल कहा और कौन्सी जग्हो पर खर्च किया.

(5) और जो इल्म सिखा उसपर किया अमल किया.

इल्म भी अल्लाह की अमानत है - इल्म अल्लाह की अमानत

है जो ऍहले इल्म है उनको ये बात बाहोशी के साथ सुन लेनी चाहिये के जिसको भी अल्लाह ने इल्म की दौलत अता फरमायी है कल कयामत के रोज अल्लाह के यहा सवाल होगा के कया अमल किया और इस इल्म का कया हक अदा किया? कितना लोगो तक पोहचाया? इल्म अमानत है, जिस रोज आपने इल्म हासिल किया था उस रोज अल्लाह के रसूलﷺ की तरफ से आपको हुकम दे दीया गया था के इस इल्म को फेलावो.

हजरत मुआज (रदी) का बिल्कुल आखरी वकत सकरात का रूह कब्ज़ होने का वकत आया तो बडे ऍहतेमाम के साथ लोगो को जमा फरमाया और फरमाया के एक हदीस रसूलुल्लाहﷺ की है जो आज तक मेने आपके सामने रिवायत नही की आज मे देख रहा हु के मेरा दुन्या से जाने का वकत करीब आ गया है इसलीये ये हदीस बयान कर रहा हु ताके मे अल्लाह के रसूलﷺ की सुनायी हुई इस वइद के तहत दाखिल न हो जाउ के जो इल्म किसी के पास है और वो

उसने छुपाया तो उसे जहन्नम की आग की लगाम पेहनायी जायेगी उसके बाद उन्होने ये हदीस सुनायी के जिस्का आखरी कलमा लाइलाह इल्लल्लाह वो जन्नत मे दाखिल हो जायेगा.

हदीस मे आता है, रसूलुल्लाहﷺ फरमाते है के अल्लाह ने किसी को मुसलमानो के कामका निगरान बनाया हो और वो इस काममे से किसी कामकी ज़िम्मेदारी किसी ऐसे को हवाले करे के उससे अच्छा इस कामको अन्जाम देने वाला मौजूद है यानी वो काम आप जिसके हवाले कर रहे है उस काम को इससे अच्छा अन्जाम देने वाला शख्स तुम्हारे अन्दर तुम्हारे मुआशरे मे मौजूद है तो उस आदमीने कौम के साथ खियानत की.

मुतवल्लीयो के वास्ते मोहतामीम के वास्ते इसमे तम्बीह मौजूद है के आप ऐसे आदमी को कोई किताब देंगे कोई ज़िम्मेदारी हवाले करेंगे के उससे ज़्यादा सलाहीयत वाला आदमी मौजूद है और तुमने इसको किताब इसलीये दी के उसका तुम्हारे साथ ताल्लुक ज़्यादा है तो आपने खियानत से काम लिया है.